डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 10.07.2020

व्याख्यान संख्या-9 (कुल सं. 45)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

सखि सोहति गोपाल कैं उर गुंजनु की माल।

बाहिर लसति मनौ पिए दावानल की ज्वाल।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

प्रस्तुत दोहे का संदर्भ नायिका के पश्चाताप का है। इसकी नायिका अनुशयना है। अनुशयना परकीया नायिका का एक भेद है जो प्रियतम से मिलन के लिए निर्धारित संकेत-स्थल के विघटित हो जाने अथवा किसी कारणवश नहीं मिल पाने के कारण पश्चाताप करती है। प्रस्तुत संदर्भ की नायिका वस्तुतः तृतीय अनुशयना है। अनुशयना के तीन भेद होते हैं। वर्तमान में संकेत-स्थल के विघटित हो जाने से जो पश्चाताप करती रहती है वह नायिका प्रथम अनुशयना है; जो भावी संकेत-स्थल के विघटित होने अथवा किसी कारण से न मिल पाने के कारण दुःखी होती रहती है वह द्वितीय अनुशयना कहलाती है और जो प्रियतम के संकेत-स्थल पर पहुँच जाने पर भी किसी कारणवश स्वयं न जा पाने के कारण खिन्न होती है वह नायिका तृतीय अनुशयना कहलाती है। प्रस्तुत प्रसंग की नायिका ऐसी ही है। उसने गुंजों (घुँघची) के कुंज में नायक से मिलने का संकेत निश्चित किया था, परंतु किसी कारणवश वह स्वयं वहाँ समय पर न पहुँच सकी। नायक संकेत-स्थल से निराश तथा दुःखी होकर लौट आया और यह सूचित करने के लिए कि मैं संकेत-स्थल पर पहुँचा था, उसने गुंजों की माला पहन ली तथा नायिका के घर

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

के सामने से (मार्ग से) गुजरा। नायिका उस समय परिवार के बड़े लोगों के साथ बैठी हुई थी। अतः वह सीधे कुछ कह नहीं सकती थी; न ही अपना पश्चाताप व्यक्त कर सकती थी। अतः वह इस प्रकार से टिप्पणी करती है ताकि बड़े लोगों की नजर में तो वह सामान्य रूप से नायक अर्थात् श्रीकृष्ण के द्वारा पहनी गयी गुंजों की माला पर एक नीरस उत्प्रेक्षा सी लगे, परंतु उसकी सखी, जो कि उसके वृतांत से परिचित है वह, पूरी बात समझ जाए। इसीलिए नायिका अपना भाव इस प्रकार व्यक्त करती है कि:

हे सखी, गोपाल के हृदय पर गुंजों की माला ऐसी शोभित होती है, मानो उनके द्वारा पिये गये दावानल की ज्वाला ही बाहर निकल कर शोभित हो रही हो।

यहाँ दावानल के भी दो प्रकार के तात्पर्य हैं। सामान्य लोगों की नजर में तो यह वही दावानल है जिसे श्रीकृष्ण ने पी लिया था। नंद जी एवं यशोदा तथा अन्य लोगों के साथ जंगल में रहने पर एकाएक आग भड़क उठने पर उन्होंने जंगल की आग को पी लिया था, उसी से प्रसंग जुड़ा हुआ है। परंतु, उसका दूसरा भाव यह है कि नायिका के नहीं पहुँच पाने से उनके हृदय को जो दुःख रूपी अग्नि सहनी पड़ी है वस्तुतः वही दावानल है, जिसकी ज्वाला बाहर निकलकर गुंजों की माला के रूप में हृदय पर दिख रही है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि प्रस्तुत दोहे में प्रयुक्त 'सोहति' एवं 'लसति' शब्द, जिसका अर्थ शोभित होना है, सामान्यतया खुशी के संदर्भ में ही प्रयुक्त होते हैं और प्रस्तुत संदर्भ में नायिका दुःखी है; फिर भी वह इन शब्दों का प्रयोग इसलिए करती है क्योंकि अन्य गुरुजनों की नजर में उसका दुःख प्रकट नहीं होना चाहिए, जबकि उसकी सखी उसके वृतांत से परिचित होने के कारण इन शब्दों के बावजूद उसके भाव आसानी से समझ लेगी। इसलिए ऐसे प्रसंग में इन शब्दों का प्रयोग उचित ही बन पड़ा है।

एक वस्तु में दूसरी वस्तु की संभावना की जाने के कारण यहाँ वस्तूत्प्रेक्षा अलंकार है, उसमें भी उत्प्रेक्षा के विषय का पहले कथन करके बाद में उसकी संभावना व्यक्त करने के कारण यहाँ 'उक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षा' अलंकार है।